स्नातक हिन्दी (प्रतिष्ठा) द्वितीय खण्ड
(तृतीय पत्र - आधुनिक हिन्दी काव्य)

- डॉ० मुन्ना साहू
हिन्दी विभाग
जे० के० कॉलेज, बिरौल

महादेवी वर्मा की काव्य संवेदना

किसी भी रचनाकार की रचनाएँ युग-विशेष की मूल प्रवृत्ति को रूपायित करती हैं। महादेवी वर्मा छायावाद की प्रमुख कवयित्री हैं। इनके काव्य में भी छायावाद की प्रवृत्तियाँ - वेदना, रहस्य-भावना, प्रणय भाव और सौंदर्यानुभूति मौजूद हैं। काव्य संवेदना की यदि बात की जाए तो महादेवी का नारी होना उनके पक्ष में जाता है। उनकी संवेदना समस्त प्राणियों के प्रति देखा जा सकता है। महादेवी की रचनाओं में नारी मुक्ति, नारी के अभिमानी रूप की अभिव्यंजना भाषा एवं शिल्प दोनों के स्तर पर प्रकट होता है। महादेवी वर्मा अभिव्यक्ति के स्तर पर प्रायः प्रतीक का सहारा लेती हैं। महादेवी का जीवन, उनका व्यक्तिगत एकाकीपन उनकी काव्य संवेदना की महत्वपूर्ण स्रोत रहा है। वेदना की सभी प्रमुख रूपों की उपस्थिति उनकी काव्य विशिष्टता है। उनका प्रियतम से नाता अत्यंत गूढ़, अत्यंत अज्ञेय है। उनकी विरहानुभूति अत्यंत उन्नत एवं उत्कृष्ट है, जिसमें प्रेम का आवेग व वेदना की तीव्रता है। इसके साथ ही व्यथित हृदय की मनोदशाओं का समावेश भी है। महादेवी वर्मा एक स्थान पर लिखती हैं - "दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एकसूत्र में बांध कर रखने की क्षमता रखता है। ... मनुष्य सुख को अकेले भोगना चाहता है, किन्तु दुःख सबको बांटकर विश्व जीवन में अपने जीवन को, विश्व वेदना में अपनी वेदना को इस प्रकार मिला देना चाहता है, जिस प्रकार एक जल बिन्दु समुद्र में मिल जाता है।" विरह और वेदना के साथ करुणा का रूप उनके काव्य में एक साथ दिखाई देता है -

"विरह का जलजात जीवन विरह का जलजात,
वेदना में जन्म और करुणा में मिला आवास।"

उपर्युक्त पंक्तियों में कवयित्री ने स्वयं के जीवन और कारुणिक वेदना की बात की है, जो उनके काव्य का सौष्ठव है।

Scanned with CamScanner

अज्ञात प्रिय से मिलने की आकांक्षा, उससे न मिल पाने की वेदना एवं विरह में ही अपने को 'थिर' बनाए रखना। यह महादेवी की कविताओं में दृष्टिगत होता है —

" बुझते ही प्यास हमारी
पल में विरक्ति बन जाती,
या
'तुमको पीड़ा में ढूँढा, तुममें ढूँढूँगी पीड़ा।"

प्रिय के प्रति संवेदना का विशिष्ट भाव उनकी कविता - 'जो तुम आ जाते एक बार' में देखा जा सकता है —

"जो तुम आ जाते एक बार!
कितनी करुणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग,
गाता प्राणों का तार तार
अनुराग भरा उन्माद राग,
आँसू लेते वे पद पखार!,,

इसी प्रकार महादेवी का प्रेम दीप प्रियतम के पथ को आलोकित करना चाहता है —

" मधुर-मधुर मेरे दीपक जल!
युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर!

'मैं नीर भरी दुख की बदली' में हृदय में उमड़ते हुए भावों का चित्रण है - " मैं नीर भरी दुख की बदली!
स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा,
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा,,

जिस प्रकार बादलों में रंग और जलकण होते हैं उसी प्रकार भावों एवं संवेदनाओं की सत्ता होती है। भाव प्रायः परिवर्तनशील होते हैं। आँखों में प्रेम के दीपक जलते हैं और पलकें भीग उठती हैं। कवयित्री के मन में उठने वाले भाव निजी नहीं रह जाते, बल्कि उनका प्रसार सृष्टि के कण-कण में होता है। कवयित्री की संवेदनाएँ ही उनकी कविता में अभिव्यक्त (2) हुई हैं।

Scanned with CamScanner